संसदीय क्षेत्र बूंदी में युवा उत्सव "पंच प्रण" में युवाशक्ति से संवाद

जब मैं युवाओं को देखता हूं, इनमें ऊर्जा देखता हूं, बड़े लक्ष्य को देखता हूं, बड़े सपने को देखता हूं, एक जुनून को देखता हूं तो मुझे भी नई सामर्थ्य और शक्ति मिलती है।

मुझे याद है कि जब अलग-अलग राज्यों से हमारे युवा साथी संसद के केन्द्रीय कक्ष में आते हैं और वे महापुरुष, जिन्होंने आजादी की लड़ाई लड़ी, देश के लिए बलिदान दिया, कुर्बानियां दी और आजादी के बाद भारत के निर्माण में योगदान दिया, उनके जीवन के बारे में ये नौजवान विचार रखते हैं। उनमें कितना सामर्थ्य है, उनकी बौद्धिक क्षमता अद्भुत है, उनका आत्मविश्वास भी मजबूत है और महापुरुषों से नई प्रेरणा और ऊर्जा लेकर जब संसद के केन्द्रीय कक्ष से वह युवा बाहर निकलता है तो वह राष्ट्र के निर्माण में अपने आपको समर्पित कर देता है। हमारी यही ताकत है, यही हमारी शक्ति है। आज हिंदुस्तान का नाम दुनिया में हो रहा है तो भारत के नौजवानों की बौद्धिक क्षमता के कारण हो रहा है।

हमारा नौजवान देश के अलग-अलग क्षेत्रों में नेतृत्व कर रहा है। विश्व के अंदर और अन्य देशों के अंदर भी उसका सामाजिक और आर्थिक योगदान है। उसका वहां के देशों के विकास में योगदान है, वहां के सामाजिक, आईटी और प्रोफेशनल सेक्टर में योगदान है, इसलिए हमारे भारत की सामर्थ्य हमारी यह नौजवान युवा शक्ति है। आपके सपने भी अद्भुत हैं और आपके संकल्प भी अद्भुत हैं। भारत के प्रधान मंत्री जी आपके इन सपनों और संकल्पों को देखकर नया भारत और विकसित भारत बनाने के सपनों को पूरा करने के लिए अपने लक्ष्य की ओर बढ़ रहे हैं। इस लक्ष्य को भारत का नौजवान पूरा करेगा। जब प्रधान मंत्री जी ने 15 अगस्त को लाल किले के मैदान से आह्वान किया कि भारत की 140 करोड़ जनता इन पांच प्रण और पांच संकल्पों को लेकर चलेगी और जब वर्ष 2047 में भारत का शताब्दी वर्ष होगा तो हम विकसित राष्ट्र होंगे तथा दुनिया का नेतृत्व करने की ताकत हमारे अंदर होगी।

इसीलिए आपके कंधों पर बहुत बड़ी जिम्मेदारी है। आप भारत के भविष्य हैं। आप इस भारत के निर्माणकर्ता हैं। आप जो सपने देखेंगे तथा जब आपकी उम्र 40 या 42 साल होगी तो आप भारत के सपनों को पूरा होते हुए देखेंगे। नौजवान साथियो, इसीलिए हम हमारी शिक्षा और संस्कार प्राप्त करें और देश के लिए कुछ करने का संकल्प भी हमारे मन में रहना चाहिए। हम जिस गांव में रहते हैं, उस गांव या शहर के अन्दर बदलाव हमारे नौजवान लाएं। वहां सामाजिक परिर्वतन हो, आर्थिक परिवर्तन हो। सामाजिक बुराइयों को समाप्त करने का संकल्प हो। नए विचारों का आदान-प्रदान हो और दुनिया जिस तेजी से आगे बढ़ रही है, उस तेजी से भारत भी आगे बढ़े। उसके लिए सूचना प्रौद्योगिकी का उपयोग करके, अपनी बौद्धिक क्षमता का उपयोग करके भारत की नई तस्वीर बनाने में अपना योगदान दें। इसीलिए प्रधान मंत्री जी ने पांच संकल्प लिए थे। विश्व भारत का सपना हम सबको पूरा करना है। हमारी ऐतिहासिक विरासत, संस्कृति और इतिहास को हम जितना याद करेंगे, उतना उस पर गौरव अनुभव करेंगे और हमें उतनी ही नई प्रेरणा मिलेगी। हमारी विरासत गौरवपूर्ण रही है। हमारा स्वतंत्रता सेनानियों का योगदान

अविस्मरणीय रहा है। नया भारत बनाने में हमारे महापुरुषों का योगदान अद्वितीय रहा है। इसीलिए हमारी विरासत का संरक्षण करना और नए आधुनिक विचारों से भारत को बनाना हमारी जिम्मेदारी है।

भारत एक लंबे कालखण्ड तक गुलामी में रहा। पहले मुगल शासकों की गुलामी में रहा और फिर अंग्रेजों के शासकों की गुलामी में रहा। इसलिए हमें उन गुलामी के विचारों को समाप्त करना होगा। उन गुलामी के विचारों से बाहर निकलकर नया भारत बनाने का संकल्प हमारे मन में होना चाहिए, हमारे आत्मविश्वास में होना चाहिए। इसको लेकर हमें काम करना है। इसलिए हमारे कार्य में नवीनता हो। अगर दुनिया में कोई कुछ नया करेगा तो वह भारत देश करेगा। यह सपना हमारे नौजवानों के मन में होना चाहिए।

विविधता में एकता हमारी ताकत है। हमारी विविध संस्कृति, विविध बोली-भाषा तथा विचार हैं, लेकिन विविधता में ही हमारी ताकत है। हमारा लोकतंत्र समृद्ध है। हमारा लोकतंत्र मजबूत है। अलग-अलग राज्यों की अलग-अलग संस्कृति होती है, अलग-अलग धर्म होता है, लेकिन यह विविधता हमें जोड़ने का काम कर रही है। यही हमारी सामर्थ्य और शक्ति है। मेरा भी कुछ न कुछ दायित्व इस देश के लिए है, समाज के लिए है। मुझे भी इस समाज को कुछ न कुछ योगदान देना है। अगर 140 करोड़ लोग इस कृत्य भावना के साथ, जहां भी हैं, जिस क्षेत्र के भी अन्दर हैं, वे यहीं विचार रखें कि देश मेरे लिए पहले है। इस मिशन से काम करेंगे तो हम बहुत जल्दी विकसित भारत और नए भारत के सपनों को पूरा कर पाएंगे।

इसलिए नौजवान साथियो, मैं आपके चेहरे के उत्साह को देख रहा हूं। काफी देर इंतजार करने के बाद भी आपमें इतना उत्साह और उमंग है। हमें अपने गांव के अंदर नया परिवर्तन करना है। हम अपने नौजवानों को खेल के मैदान में लाएं। वृक्षारोपण करके पर्यावरण को हरा-भरा बनाएं। पर्यावरण शुद्ध करें तथा स्वच्छता हमारे मन में और विचार कर्म में होना चाहिए। हमें गांव के अंदर सामाजिक बुराइयों को समाप्त करने का विचार देना है। हमारे बच्चे जो पढ़ रहे हैं, उनको अच्छी शिक्षा व संस्कार मिलें, इसके लिए हमें सामूहिकता के साथ काम करना है।

मुझे आशा है कि नेहरू युवा केन्द्र इस दिशा में काम कर रहा है। नेहरू युवा केन्द्र के नौजवानों के मन में इसी तरीके का समर्पण राष्ट्र और देश के लिए रहता है।